नईदुनिया

संपादकीय

भारत की बड़ी कामयाबी

मुंबई 26/11 आतंकी हमले के आरोपी तहव्वुर राणा का अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट में रिव्यू पिटिशन खारिज होने के बाद उसके प्रत्यर्पण की राह खुल गई है। राणा के प्रत्यर्पण से पाकिस्तानी सुरक्षा प्रतिष्ठान की भूमिका पर रोशनी डालने में मदद मिल सकती है। इस मामले की तह तक पहुंचने के लिए कूटनीतिक सावधानी जरूरी है। 26/11 यानी मुंबई आतंकी हमले के बहुचर्चित आरोपी तहव्वुर राणा का अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट में दायर रिव्यू पिटिशन खारिज होने के बाद उसके प्रत्यर्पण की राह खुल गई है। यह भारत की एक अहम कूटनीतिक और कानूनी जीत तो है ही, आतंक के कारोबारियों को न्याय की वेदी पर ला पटकने के वैश्विक अभियान के लिहाज से भी एक बड़ा कदम है।

2008 का मुंबई आतंकी हमला न केवल देशवासियों को स्तब्ध कर देने वाला था बल्कि इसने पूरी दुनिया को सकते में डाल दिया। जिस तरह समुद्री मार्ग से आए लश्कर-ए-तैयबा के दस आतंकवादियों ने भारत की वित्तीय राजधानी को बंधक सा बना लिया और यहां तीन दिनों तक आतंक का खेल खेलते रहे, उसे भुलाना मुश्किल है। इस हमले से जुड़े कई आतंकी इस दौरान मारे भी जा चुके हैं, लेकिन भारत की न्याय व्यवस्था का सामना करने की जहां तक बात है तो कसाब के बाद तहव्वुर राणा दूसरा प्रमुख चेहरा होगा।

आतंक के इस खेल में मोहरे बने लोग भले सामने नजर आते हों, उनकी भूमिका नगण्य ही होती है। असल भूमिका इन्हें परदे के पीछे से बढ़ावा देने वाले उन लोगों की होती है जो आम तौर पर परदे के पीछे ही बने रहते हैं। तहव्वुर राणा का यह प्रत्यर्पण इस लिहाज से भी अहम है। वह न केवल मुख्य आरोपी डेविड कोलमैन हेडली का करीबी सहयोगी रहा बल्कि कनाडा जा बसने से पहले पाकिस्तान आर्मी में मेडकल ऑफिसर के तौर पर भी काम करता रहा है। आश्चर्य नहीं कि 26/11 केस में पब्लिक प्रॉसीक्यूटर रहे उज्ज्वल निकम समेत कई लोग मानते हैं कि यह प्रत्यर्पण इस मामले में पाकिस्तानी सुरक्षा प्रतिष्ठान से जुड़े अफसरों की भूमिका पर भी बेहतर ढंग से रोशनी डाल सकता है। ऐसे में बहुत महत्वपूर्ण है कि आने वाली चुनौतियों की गंभीरता को समझते हुए एक-एक कदम फूंक-फूंक कर बढ़ाया जाए। राणा की सुरक्षा सुनिश्चित करना और तमाम अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन करते हुए आगे बढ़ना जितना जरूरी है, उतना ही महत्वपूर्ण है कूटनीतिक मोर्चे पर सावधानी बनाए रखना। तभी इस मामले की अंतरराष्ट्रीय साजिश से जुड़ी तमाम परतों को खोलना और इसमें शामिल सभी तत्वों को बेनकाब करना संभव हो पाएगा।

सात्विक राजनीति के उन्नायक बन कर उभरे योगी

आचार्य संजय तिवारी

सनातन संत के संयोजन में प्रयागराज कुंभ का अद्भुत स्वरूप उभर रहा है। वैश्विक पटल पर सनातन की गूंज है। विश्व आश्चर्यचकित है। कई देशों की उतनी आबादी नहीं है जितने श्रद्धालु प्रतिदिन पवित्र त्रिवेणी में स्नान कर रहे हैं। जिस तरह से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दिसंबर में कुंभ का आरंभ किया उसके बाद की व्यवस्था सम्भाल रहे योगी आदित्यनाथ वास्तव में सात्विक शासक बन कर उभरे हैं। इसे सात्विक राजनीति का उन्नयन काल भी कहा जा सकता है। एक तरफ विश्व संत्रस्त है। अनेक देश युद्ध की विभीषिका में घिरे हैं। मानवता कराह रही है। स्त्रियों, वृद्धों, मासूम बच्चों की लाशें गिनती से बाहर हैं। पश्चिम में बारूद ही बारूद है। भारत के पास पड़ोस में भी बारूदी धुएं से वातावरण दूषित है। मनुष्य ही मनुष्य का दुश्मन बनकर रक्त पिपासु हो गया है। कई वर्षों से आसमान में तोप, रॉकेट और सुपरसोनिक युद्धक विमान कोहराम मचाए हुए हैं। ऐसे माहौल में भारत की सनातन संस्कृति अपने सृष्टि पर्व के माध्यम से विश्व के कल्याण का उदघोष कर रही है।

सनातन संत परंपरा और सात्विक राजनीति के उन्नायक योगी आदित्यनाथ के संयोजन में प्रयागराज के त्रिवेणी तट से जो संदेश विश्व को प्रसारित हो रहा है वह नए भारत के प्राचीन गौरव के साथ बहुत कुछ कह रहा है। योगी आदित्यनाथ ने इस महा आयोजन को उतना ही गौरवशाली बना दिया है। योगी के अथक परिश्रम से यह कुंभ विश्व को भारत के सात्विक सनातन और समन्वय की राजनीति का भी संदेश दे रहा है। यह भारत के अध्यात्म की ध्वज तरंग को डिग दिगंत तक प्रसारित करने वाला है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि सभी अखाड़ों, संप्रदायों, जगद्गुरुओं और शंकराचार्यों के साथ ही समस्त नागा एवं संत समाज इस समय योगी आदित्यनाथ के इस परिश्रम और उनके दिव्य संयोजन की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहा है। ऐसा पहली बार हो रहा है कि समस्त विद्वत और संत समाज

सनातन संत परंपरा और सात्विक राजनीति के उन्नायक योगी आदित्यनाथ के संयोजन में प्रयागराज के त्रिवेणी तट से जो संदेश विश्व को प्रसारित हो रहा है वह नए भारत के प्राचीन गौरव के साथ बहुत कुछ कह रहा है। योगी आदित्यनाथ ने इस महा आयोजन को उतना ही गौरवशाली बना दिया है। योगी के अथक परिश्रम से यह कुंभ विश्व को भारत के सात्विक सनातन और समन्वय की राजनीति का भी संदेश दे रहा है।

एक स्वर से अपने शासक की तारीफ कर रहा हो। भारत की प्राण मां गंगा, यमुना और सरस्वती के पवित्र त्रिवेणी तट पर प्रयागराज में करोड़ों लोग आस्था की डुबकी लगा चुके हैं। यह अद्भुत है। प्रधानमंत्री मोदी का विश्वगुरु भारत का सपना साकार हो रहा है। प्रयाग की धरती से भारत विश्व को मानवता और लोक कल्याण का संदेश दे रहा है। भारत की संस्कृति, अध्यात्म और आस्था के आगे विश्व नतमस्तक है। धरती का हर कोना प्रयागराज से आकर्षित है। सभी यहां आना चाहते हैं। सभी पवित्र त्रिवेणी में डुबकी भी लगाना चाहते हैं। यह वास्तव में विश्व के अन्वेषकों और चिंतनशील शोधार्थियों के लिए कौतुक जैसा है।

ऐसा क्यों है, यह विचारणीय है। अभी कुछ ही दिन हुए, 26 दिसंबर 2024 को द हिंदू ने हिंसाग्रस्त विश्व के हालातों पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी। इस रिपोर्ट में कहा गया कि वर्ष 2024 में कई ऐसे अंतरराष्ट्रीय संघर्ष हुए, जिन्होंने भू-राजनीतिक परिदृश्य और वैश्विक स्थिरता को चुनौती दी। यूक्रेन में चल रहे युद्ध से लेकर मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव तक , इस वर्ष गठबंधनों में बदलाव और विनाशकारी सैन्य अभियान देखने को मिले। इन संकटों का प्रभाव उनके तत्काल क्षेत्रों से कहीं आगे तक फैला, जिसने दुनिया भर में राजनयिक संबंधों और रणनीतिक प्राथमिकताओं को प्रभावित किया। रिपोर्ट में कहा गया कि बीते वर्ष की शुरुआत रूस द्वारा यूक्रेन के विरुद्ध 2022 के युद्ध को जारी रखने के साथ हुई , जिसका उद्देश्य उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) को अपनी सीमाओं की ओर बढ़ने से रोकना था। गाजा पट्टी, लेबनान और लेबनान का खूनखराबा सामने है। हमास, हिजबुल्ला, हूथी का खौफनाक चेहरा दुनिया देख रही है। इजराइल सबसे मुकाबला कर रहा है।

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के साथ ही यूक्रेन को अमेरिका से मिलने वाले समर्थन में बदलाव आने की संभावना बनी। इस बीच, क्षेत्र में ईरानी प्रॉक्सी कमजोर हो गए हैं, जिससे इजराइल को अपनी क्षेत्रीय स्थिति को और मजबूत करने का मौका मिल गया है। 12 दिसंबर 2024 से पहले के 12 महीनों के लिए 10 देशों को चरम संघर्ष वाले देशों की श्रेणी में रखा गया है। ये हैं - फिलिस्तीन, म्यांमार, सीरिया, मैक्सिको, नाइजीरिया, ब्राज़ील, लेबनान, सूडान, कैमरून और कोलंबिया। 2024 में साल एक जनवरी से 13 दिसंबर तक, युद्ध, विस्फोट, दूरस्थ हिंसा और नागरिकों के खिलाफ हिंसा में 200,000 से अधिक लोग मारे गए। इस मृत्यु दर का लगभग आधा हिस्सा मुख्य रूप से तीन देशों से आता है: यूक्रेन, फिलिस्तीन और म्यांमार। हालांकि वास्तविक मौतों का आंकड़ा इससे कहीं ज्यादा है। पिछले वर्षों में, अफगानिस्तान में संघर्ष से संबंधित मौतों का एक बड़ा हिस्सा रहा है, खासकर तालिबान द्वारा सरकार पर कब्जा करने से पहले। यह संकट अंतरराष्ट्रीय कूटनीति, संघर्ष समाधान और मानवीय हस्तक्षेप की तत्काल आवश्यकता की कड़ी याद दिलाते रहे। इस रिपोर्ट में सब कुछ सत्य नहीं है किंतु सत्य के काफी निकट अवश्य है। वैश्विक परिदृश्य में सनातन भारत की यह खगोलीय महावैज्ञानिक घटना अपने 46 दिनों की इस अवधि में बहुत कुछ स्थापित करने वाली है। यह सनातन भारत की आत्मिक शक्ति है जिसके आगे दुनिया नतमस्तक है। यही है कुंभ और यही है भारत की वह भारतीय सनातनी परंपरा जो भारत को विश्वगुरु बना देती है।

इतिहास में अमर है 1600 वीरांगनाओं का जौहर

हितानंद शर्मा

चंदेरी जौहर दिवस पर विशेष

इसी चंदेरी के दुर्ग में राजपूताने की 1600 से अधिक वीरांगनाओं ने एक साथ अग्निकुंड में अग्निदाह कर मृत्यु को स्वीकार किया।मालवा की राजधानी रहे चंदेरी का मजबूतदुर्ग आज भी राजा मेदिनी राय के पराक्रम और वीरता की गाथा कहता है। इसी दुर्ग के खूनी दरवाजे में 1600 से अधिक वीरांगना नारियों के बलिदान की करुण किन्तु महान बलिदान की कथा भी लिखी है। 496 वर्ष बीत गए हैं। यह इतिहास के उस कालखंड की पराक्रमी राजा मेदिनी राय और रानी मणिमाला की वीरता और शौर्य के साथ करुणा से भरी गाथा है। चंदेरी तब राजा मेदिनी राय का शासन था। उनकी रानी मणिमाला भी उन्हीं की तरह स्वाभिमानी थी। चंदेरी सामरिक, व्यापारिक और मालवा में प्रवेश की दृष्टि से अतिमहत्वपूर्ण था।

स्वदेश स्वाभिमान और स्वतंत्रता की रक्षा करने के भारतीयों के संकल्प और संघर्ष विश्व इतिहास में अनूठे हैं। किसी थोड़े से कालखंड नहीं बल्कि यह हजार वर्षों के सतत संघर्ष की शौर्यगाथा है। संस्कृति और धर्म की रक्षा के लिएपुरुष,स्त्री, युवा, बच्चे, वृद्ध सभी के बलिदान प्रणम्य हैं। अपने स्वत्व, स्वाभिमान और सतीत्व की रक्षा के इस संघर्ष में स्त्रियों ने भी सदैव त्याग और बलिदान का मार्ग चुना। पहले अपने परिवार के पुरुषों का संबल बन कर विजय की कामना के साथ उनके भाल पर तिलक कर युद्ध क्षेत्र में भेजा। दुर्भाग्य से यदि विजयश्री न मिली तो किले मेंही स्वयं की अस्मिता की हर कीमत पर रक्षा की। भारत की महान बेटियों ने अग्नि की भस्म बन जाना स्वीकार किया लेकिन अपनी मृत देह को भी शत्रु को स्पर्श नहीं करने दिया। मध्यकालीन बर्बर आक्रांताओं से अपनी अस्मिता की रक्षा करने के लिए इन महान भारतीय नारियों ने जौहर के अग्निपथ पर चलने में भी एक क्षण की देरी नहीं की। जौहर की ऐतिहासिक घटनाओं के ये उदाहरण केवल भारत में ही मिलते हैं।

मध्यकालीन बर्बर मुगल आक्रांताओं से युद्ध में पराजय के बाद अपनी अस्मिता बचाने के लिए सिंध, ग्वालियर, रणथंभौर, चित्तौड़,चंदेरी सहित अन्य कई स्थानों पर वीरांगना नारियों ने जौहर कर अपना आत्मोत्सर्ग किया। इनमें चंदेरी का जौहर सबसे बड़ा जौहर रहा। चंदेरी वर्तमान में अशोकनगर जिले में स्थित एक नगर है। इसी चंदेरी के दुर्ग में राजपूताने की 1600 से अधिक वीरांगनाओं ने एक साथ अग्निकुंड में अग्निदाह कर मृत्यु को स्वीकार किया।मालवा की राजधानी रहे चंदेरी का मजबूतदुर्ग आज भी राजा मेदिनी राय के पराक्रम और वीरता की गाथा कहता है। इसी दुर्ग के खूनी दरवाजे में 1600 से अधिक वीरांगना नारियों के बलिदान की करुण किन्तु महान बलिदान की कथा भी लिखी है।

496 वर्ष बीत गए हैं। यह इतिहास के उस कालखंड की पराक्रमी राजा मेदिनी राय और रानी मणिमाला की वीरता और शौर्य के साथ करुणा से भरी गाथा है। चंदेरी में तब राजा मेदिनी राय का शासन था। उनकी रानी मणिमाला भी उन्हीं की तरह स्वाभिमानी थी। चंदेरी सामरिक, व्यापारिक और मालवा में प्रवेश की दृष्टि से अतिमहत्वपूर्ण था। विध्वंसक विस्तारवादीनीति के साथ आक्रांता बाबर मालवा पर अपनी कुदृष्टि डाल चुका था। वह दिसंबर 1527 में अपनी सेना लेकर चंदेरी की ओर बढ़ा। उसने इस युद्ध को जेहाद घोषित किया। 20 जनवरी 1528 को उसने राजा मेदिनी राय को एक पत्र भेजा जिसमें आत्मसमर्पण कर मुगल राज्य की अधीनता स्वीकार करने का प्रस्ताव था। बदले में शमशाबादकी जागीर देने का भी प्रस्ताव था। राजा मेदिनी राय स्वाभिमानीराजा थे, उन्होंने अधीनता का यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। शत्रु बिल्कुल निकट आ गया था यह देख उन्होंने युद्ध की तैयारी और तेज कर दी।मेवाड़ के राणासांगा इसके पूर्व में16 मार्च 1927 को बाबर के विरुद्ध राजपूत शक्ति की ओर खानवा के युद्ध में पराजय देख चुके थे, राजा मेदिनी राय भी इस युद्ध में वीरता से लड़े थे। खानवा के युद्ध में राजपूत शक्ति कमजोर पड़ जाने से राणासांगा की ओर से भी सहायता मिलना संभव नहीं हो रहा था। पराजय लगभग तय थी फिर भी वीर मेदिनीराय ने झुकने के स्थान पर युद्ध का विकल्प चुना। एक वीर योद्धा युद्ध लड़ कर विजय प्राप्त करने या वीरगति को प्राप्त हो जाने के लिए सदैव उन्मुख रहता है। युद्ध की घोषणा कर दी गई।

27 जनवरी को सूर्य उदय होते ही युद्ध शुरू हुआ।तीसरे दिन 29 जनवरी को भीषण और निर्णायक युद्ध हुआ। पराक्रम से लड़ते हुए राजा मेदिनीराय वीरगति को प्राप्त हुए। राजा की मृत्यु और बाबर के महल की ओर आने की सूचना जैसे ही रानी मणिमाला के पास पंहुचीतो उन्होंने 1600 क्षत्राणियों और अपने सतीत्व की रक्षा हेतु जौहर का निर्णय लिया। महल के अंदर बनाए गए जौहर कुंड में प्रज्जवलित अग्नि में एक-एक कर सभी क्षत्राणियों ने समिधा के समान स्वयं की आहुति दे दी। अग्नि की लपटें कई कोस दूर तक दिखाई दे रही थी। जब यह दृश्य महल में आए बर्बर बाबर ने देखा तो वह भी कांप गया।उसके साथ आई चौथी बीबी दिलावर बेगम वहीं बेहोश होकर गिर गयी। इस प्रकार इन महान नारियों ने अपने स्वाभिमान और सतीत्व की रक्षा के लिए स्वयं को बलिदान कर दिया।

चंदेरी के दुर्ग में ऐतिहासिक जौहर की यह गाथा क्षत्राणियों ने अपने रक्त से लिखी है। यह भारत की नारियों का अपनी अस्मिता और सतीत्व की रक्षा के लिए किए गए आत्मोत्सर्ग का ऐसा उदाहरण है जिसकी दूसरी मिसाल विश्व इतिहास में नहीं मिलती। इसी जौहर की स्मृति में किले में एक स्मारक बनाया गया है और प्रतिवर्ष इन वीरांगनाओं को श्रद्धांजली देने आयोजन होते हैं। यह स्मारक इस बात का संदेश देता है कि भारतीयों ने बिना झुके अपना बलिदान देकर भी देश, धर्म, संस्कृतिऔर स्वाभिमान को बचाए रखा। ऐसे ही अनगिनत बलिदानों की बुनियाद पर आज भारतीय समाज सुखी और स्वतंत्र जीवन जी रहा है। चंदेरी का यह जौहर वास्तव में देश के स्वाभिमान के लिए प्रेरणा है।

आजकल

एआई वरदान या खतरा

तकनीकी विकास का उद्देश्य सदा मानवीय कामकाज को आसान और उत्कृष्ट बनाना होता है। मगर, इसके पीछे यह चुनौती भी स्वत: जुड़ी होती है कि इसके दुरुपयोग को कैसे रोका जाए। अराजक किस्म के लोग हमेशा तकनीक का उपयोग अव्यवस्था फैलाने या व्यवस्थागत ढांचे में सेंधमारी के लिए करते हैं। कृत्रिम मेधा यानी आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस नाम की नई तकनीक आने के बाद इसकी चिंता और बढ़ गई है। शुरू से ही लोग विरोध कर रहे हैं कि कृत्रिम मेधा को प्रश्रय देने से लोगों की रचनात्मकता, निजता और वित्तीय सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी। इसलिए कि यह ऐसी तकनीक है, जो दुनिया भर में उपलब्ध सूचनाओं को खंगाल कर किसी भी व्यक्ति को वांछित सूचनाएं उपलब्ध करा देता है।

हालांकि एल्गोरिद्म तकनीक सूचनाओं की छानबीन पहले से ही करती आ रही है। कृत्रिम मेधा के इस्तेमाल से यह काम बड़े स्तर पर और कई गुना अधिक तेजी से किया जा सकता है। इसलिए दुनिया भर के देश चिंतित हैं कि डेटा संग्रह में सेंधमारी करने वाले इस तकनीक का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग करेंगे। यह तकनीक अभी अपने प्रारंभिक चरण में है, मगर इसका दुरुपयोग व्यापक स्तर पर दिखाई देने लगा है।

दरअसल, विश्व आर्थिक मंच के सम्मेलन में कई देशों ने रेखांकित किया कि कृत्रिम मेधा के अनियंत्रित प्रसार पर लगाम कसने की जरूरत है। स्पेन के प्रधानमंत्री ने यूरोपीय संघ से आह्वान किया कि गलत सूचना और साइबर उत्पीड़न पर अंकुश लगाने के लिए कठोर कदम उठाया जाना चाहिए। एल्गोरिद्म में पारदर्शिता के लिए शक्तियों के विस्तार की जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने कृत्रिम मेधा को वैश्विक चुनौती बताते हुए कड़ी चेतावनी जारी की, इसे मानवता के लिए एक बड़ा जोखिम बताया और इस मामले में सरकारी और नीजी स्तर पर एकीकृत कार्रवाई पर जोर दिया। सही है कि चिकित्सा, शिक्षा, संचार, अभियांत्रिकी आदि क्षेत्रों में कृत्रिम मेधा का सशक्त योगदान हो सकता है। इससे आगे की तकनीक विकसित करने में बहुत आसानी होगी, मगर इसके प्राथमिक चरण में ही जिस तरह वित्तीय हेराफेरी, लोगों के उत्पीड़न, गलत सूचनाएं प्रसारित कर बदअमनी फैलाने की कोशिशें लगातार देखी जा रही हैं, उससे चिंता बढ़ना स्वाभाविक है। इसके दुरुपयोग पर अंकुश लगाने की तकनीक विकसित करने की उम्मीद उन्हीं लोगों से की जाती है, जिन्होंने इसका विकास किया है।

हर बार सनातन की आस्था पर प्रहार

प्रो. मनीषा शर्मा

कुंभ भारत की सनातन संस्कृति की अद्वितीय शक्ति, आध्यात्मिकता, सहिष्णुता और एकता का प्रतीक है । यह आत्मा की शुद्धता और सामाजिक समरसता का प्रतीक है। भारत अपनी सनातन संस्कृति के लिए विश्व भर में जाना जाता है। यह कुंभ आत्मा के शुद्धिकरण और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति का माध्यम है ।कुंभ सिर्फ धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं है बल्कि यह भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक विविधता को दर्शाता है।

कुंभ मेला वसुधैव कुटुंबकम की उस अवधारणा को चरितार्थ करता है जिसमें संपूर्ण विश्व को स्वयं में समाहित करने की शक्ति है । देश दुनिया से अनेक लोग अपने-अपने आस्था- विश्वास की डोर को हाथों में थाम कर, अपने रीति- रिवाज, संस्कार, आचार- व्यवहार को अपने साथ लेकर भारत भूमि पर आए हैं और यहां का दृश्य देख वे आश्चर्य और विस्मय से भर गए हैं । वे देख रहे हैं कि भारत की सनातन संस्कृति किस तरह से अपनी बांहे खोल उनका स्वागत कर रही है। वे देख रहे है यहां की सामाजिक समरसता को जहां लिंग, जाति, धर्म, पंथ, संप्रदाय ,मत, अमीर-गरीब, पूरब - पश्चिम के भेद का कोई अर्थ नहीं है। यहां अनेक को एकाकार होते हुए देखा जा सकता है।

तीर्थराज प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ हमारी सनातन संस्कृति की आस्था और आध्यात्मिकता की जीवंत अभिव्यक्ति है परंतु ऐसे समय में भी हमारे देश का विपक्ष राजनीति करने से,सनातन की मान्यताओं का मखौल उड़ाने से बाज नहीं आ रहा है। कुंभ में भाजपा नेताओं के स्नान को डुबकी कह कर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने बता दिया है कि उन्हें सनातन धर्म की, उसकी परंपराओं की कितनी गहरी समझ है। वरना वे करोड़ों लोगों की आस्था को अपने शब्दों से आहत नहीं करते । उन्होंने कहा कि इस महाकुंभ में हजारों रुपये खर्च कर के कंपटीशन में भाजपा नेता डुबकी लगा रहे हैं और तब तक डुबकी लगाते हैं जब तक टीवी में अच्छा नहीं आ जाता। उनका मानना है कि धर्म के नाम पर गरीबों का शोषण हो रहा है । उन्होंने कहा कि क्या

गंगा में डुबकी लगाने से गरीबी दूर हो सकती है ? क्या इससे पेट भरता है? उनका यह बयान उस दिन आया जब केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने महाकुंभ में संगम पर पवित्र स्नान किया।

वस्तुत: ऐसे ही बयान कांग्रेस और उसके नेताओं ने अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के समय दिये थे कि राम मंदिर बनने से क्या हो जाएगा? क्या लोगों को रोजगार मिल जाएगा,मंदिर की जगह अस्पताल की देश को जरूरत है आदि? आज उन्होंने गंगा स्नान पर इस तरह का बयान दिया है। बात सिर्फ महाकुंभ या राम मंदिर की नहीं है। हमेशा से विपक्ष और विपक्ष के नेताओं ने धर्मनिरपेक्षता के नाम पर सनातन की आस्था पर प्रहार करने का एक भी मौका नहीं छोड़ा है। ये लोग बताए कि क्या महाकुंभ में आने वाला हर एक व्यक्ति बीजेपी का है। हजारों वर्षों की कुंभ की परंपरा क्या बीजेपी ने शुरू की थी? क्या ये कह सकते है कि हज यात्रा करने से क्या हो जाएगा? जब बात दूसरे धर्म की धार्मिक मान्यताओं की, परंपराओं की होती है तब यह लोग कुछ नहीं कहते परन्तु जब बात सनातन की होती है तो इनके सामने देश की हर समस्या आ जाती है।इन्हें सनातन संस्कृति की हर एक मान्यता, हर एक प्रथा , प्रत्येक रीति रिवाज अंधविश्वास लगता है। ये अपने बयानों में उसका मजाक उड़ाते हैं। पिछले 15 दिनो में महाकुंभ में 14 करोड लोगों ने पवित्र स्नान किया है ।क्या ये सभी 14 करोड लोग भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता है या योगी ,मोदी सरकार के लोग हैं । इसी के साथ करीब 62 देशों के दो लाख के करीब विदेशी अनुयायियो ने महाकुंभ में स्नान किया जिनमें कई प्रसिद्ध लोग भी है। क्या वह भी बीजेपी के हो गए ।

आज संपूर्ण दुनिया महाकुंभ के वैभव, सनातन की आस्था को देखकर विस्मित, नतमस्तक है, लेकिन हमारे देश के हिंदू धर्म में ही पैदा हुए लोग महाकुंभ में पवित्र स्नान को डुबकी लगाना, अंधविश्वास कहते हैं। इन लोगों को ना देश की सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान है, ना परंपरा की समझ है । लेकिन सवाल यही है कि हर बार सनातन पर ही प्रहार क्यों? क्यों हर बार सनातन की परंपरा, मूल्य, नायकों और संस्कृति को निशाना बनाकर प्रहार किया जाता है। भारत को एक सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में सारा विश्व जानता है राष्ट्र जिसकी एक संस्कृति, परंपरा, साहित्यिक अवधारणा आचार-विचार, व्यवहार होता है। इस संदर्भ में कुंभ महज एक मेला भर नहीं है। वह हजारों सालों से पोषित भारत की सनातन संस्कृति की वह परंपरा है जिसमें सनातन संस्कृति की आत्मा रची बसी है। अत: धर्मनिरपेक्षता का अर्थ किसी धर्म विशेष की आस्था पर प्रहार नहीं होता है। यह बात बड़े - बड़े बोल बोलने वाले और आस्था का अपमान करने वाले नेता जान लें तभी वे भी देश का और जनता का भला सोच पाएंगे।